B.A. 2nd Semester (Honours) Examination, 2019 (CBCS)

Subject : Sanskrit

Paper : CC-IV

Time: 3 Hours **Full Marks: 60**

The figures in the margin indicate full marks.
Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

1. प्रत्येकं विभागात् न्यूनतया *प्रश्नत्रयं* स्वीकृत्य *दशानां*प्रश्नानामुत्तरं सुरगिरा देवनागरीमाश्रित्य च समाधीयताम्।
প্রত্যেকটি বিভাগ থেকে অন্তত *তিনটি* করে প্রশ্ন নিয়ে মোট *দশটি* প্রশ্নের উত্তর সংস্কৃত ভাষায় এবং দেবনাগরী লিপিতে লেখো। 2×10=20

'क' विभाग:
'क' বিভাগ

(a) 'योगो नष्ट: परन्तप' — अत्र 'योग' शब्दस्य कोऽर्थ:?
'योगो नष्ट: परन्तप' — এখানে 'योग' শব্দের অর্থ কী?

(b) 'बहवो ज्ञानतपसा पूता: मद्भावमागता:।' — के कथं वा श्रीकृष्णभावमागता:?
'बहवो ज्ञानतपसा पूता: मद्भावमागता:।' — তাঁরা কীভাবে শ্রীকৃষ্ণের ভাব প্রাপ্ত হন?

(c) 'क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा।' — कर्मजा सिद्धि: का भवति?
'क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा।' — 'कर्मजा सिद्धि:' কী?

(d) चातुर्वर्ण्यं किम्? परमेश्वरस्य चातुर्वर्ण्य-विभागरीति: कीदृशी?
चातुर्वर्ण्यं কী? পরমেশ্বরের চারটি বর্ণের বিভাগের পদ্ধতি কেমন?

(e) किं नाम विकर्म?
'विकर्म' কী?

'ख' विभाग:
'খ' বিভাগ

(a) स्वाध्यायज्ञानयज्ञ: को भवति?
'स्वाध्यायज्ञानयज्ञ:' কী?

(b) 'अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजित:' — वार्ष्णेय: को भवति? अनिच्छन्नपि जन: केन कस्मिन् विषये च बलात् नियोजितो भवति?
'अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजित:' — वार्ष्णेय: কে? অনিচ্ছুক ব্যক্তি বলপূর্বক কার দ্বারা কোন বিষয়ে নিয়োজিত হয়?

(c) 'न कर्म्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय' — कीदृशं कर्म अत्र अभिहितं भगवता? कर्म्माणि कं न निबध्नन्ति?
'न कर्म्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय' — এখানে ভগবান কীরূপ কর্মের কথা বলেছেন? কর্মসমূহ কাকে বন্ধন করে না?

(d) 'कर्म्मभिर्नं स बध्यते' — कर्म्मभि: क: कथं वा न बध्यते?
'কর্ম্মভির্নং স বধ্যতে' — কর্ম্মের দ্বারা কে কেনই বা আবদ্ধ হন না?

(e) 'सम्भवामि युगे युगे' — क: कथं वा आत्मानं सम्भवति?
'सम्भवामि युगे युगे' — কে কেনই বা নিজেকে সৃষ্টি করেন?

'ग' विभाग:

'গ' বিভাগ

(a) 'यतचित्तत्मा' — इति शब्दस्य कोऽर्थ:?
'यतचित्तत्मा' — এই শব্দের অর্থ কী?

(b) राजसप्रिय भोजनं कोदृशं भवति?
রাজসিক ব্যক্তিদের কীরূপ ভোজন প্রিয় হয়?

(c) 'न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वत:' — स्थित: क:? कस्मात् तत्त्वत्: स न चलति?
'न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वत:' — স্থিত কে? কোন তত্ত্ব থেকে তিনি বিচ্যুত হন না?

(d) युक्तस्वप्रावबोधस्य जनस्य योग: कथं दु:खहा भवति?
যোগ কীভাবে উপযুক্ত নিদ্রা ও জাগরণকারীর দুঃখ বিনাশক হয়?

(e) भगवता अर्जुन: कथं 'भारत' — इति नाम्ना सम्बोधित:?
ভগবান অর্জুনকে কেন 'ভারত' — এই নামে সম্বোধন করেছিলেন?

2. अध:स्थितेषु प्रश्नेषु यथाकामं *चतुष्टयं* समाधीयताम्। तेषु च यत्किञ्चन *द्वितयं* सुरगिरा लिख्यताम्।
নীচের প্রশ্নগুলির থেকে যে কোনো *চারটি* প্রশ্নের উত্তর দাও। তার মধ্যে *দুটি* প্রশ্নের উত্তর সংস্কৃত ভাষায় লেখো। 5×4=20

(a) सुरगिरा व्याख्या कार्या।
সংস্কৃত ভাষায় ব্যাখ্যা করো। 5

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना।।

अथवा,

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च।।

(b) सुरगिरा व्याख्या कार्या।
সংস্কৃত ভাষায় ব্যাখ্যা করো। 5

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिन:।।

अथवा,

आयु:सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धना:।
रस्या: स्निग्धा: स्थिरा हृद्या आहारा: सात्त्विकप्रिया:।।

(c) मातृभाषायाम् अनुवद।

মাতৃভাষায় অনুবাদ করো। 5

त्यक्त्वा कर्म्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रय:।

कर्म्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित् करोति स:।।

(d) मातृभाषायाम् अनुवद।

মাতৃভাষায় অনুবাদ করো। 5

यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सर:।

सम: सिद्धावसिद्धौ च कृत्वाऽपि न निबध्यते।।

(e) प्राणायाम: क:? अस्य साधनोपाय: संक्षेपेण आलोच्यताम्।

প্রাণায়াম কী? এর সাধনপ্রণালী সংক্ষেপে আলোচনা করো। 2+3=5

(f) 'तमाहु: पण्डितं बुधा:' — इति मन्त्रांशानुसारं पण्डितस्य लक्षणं स्पष्टीक्रियताम्।

'तमाहु: पण्डितं बुधा:' — এই মন্ত্রাংশানুসারে পণ্ডিতের লক্ষণ স্পষ্ট করো। 5

3. अधोनिर्दिष्टेषु प्रश्नेषु यथाकामं *द्वितयं* समाधीयताम्।

অধোনির্দিষ্ট প্রশ্নসমূহের মধ্যে যে কোনো *দুইটির* উত্তর দাও। 10×2=20

(a) 'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' — इति मन्त्रपादमाधारीकृत्य पवित्रतमस्य ज्ञानस्य तात्पर्यं श्रीमद्भगवद्गीतानुसारम् आलोच्यताम्।

'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते' — এই মন্ত্রপাদানুসারে পবিত্রতম জ্ঞানের তাতপর্য শ্রীমদ্ভগবদ্গীতার অনুসারে আলোচনা করো। 10

(b) 'इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्' — अत्र विवस्वान् क:? की दृश: योगो वा अत्र उपदिष्ट:? यथापाठ्यांशानुसारं अस्य योगस्य स्वरूपं स्पष्टीक्रियताम्।

'इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्' — এখানে বিবস্বান্ কে? কীরূপ যোগ এখানে উপদিষ্ট হয়েছে? পাঠ্যাংশের অনুসরণে সেই যোগের স্বরূপ স্পষ্ট করো। 1+1+8=10

(c) 'आत्मसंस्थं मन: कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत्।' — मनस: आत्मसंस्थसाधनोपाय: वैशद्येन व्याख्यायताम्।

'आत्मसंस्थं मन: कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत्।' — মনের আত্মাতে স্থিতির সাধনপ্রণালী বিশদে ব্যাখ্যা করো।

(d) श्रीमद्भगवद्गीतायां कति अध्याया: सन्ति? ग्रन्थस्यास्य त्वदीय-पाठ्यांशे प्रतिभासितम् आध्यात्मिकदर्शम् आलोच्यताम्।

শ্রীমদ্ভগবদ্গীতায় কয়টি অধ্যায় রয়েছে? উক্তগ্রন্থে তোমার পাঠ্যাংশে প্রতিভাসিত আধ্যাত্মিক দর্শন আলোচনা করো। 1+9=10

———